अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर–2020

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 Nov. 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd Nov. 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–सातवां | नवम्बर–2020

5 पवित्रता बनाए रखें

9 सतगुरु ही मुक्तिदाता है

21 नाम का रंग

31 सवाल-जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह, राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 224 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

इस प्रेम दी दुनिया विच सजणा

इस प्रेम दी दुनिया विच सजणा, नुकसान उठौणा पैंदा ऐ
पिच्छों प्रीतम प्यारा तां मिलदा, पहलां सिर कटवौंणा पैंदा ऐ x 2

1. *जिसने वी प्रेम कमाया ऐ, ना अपना आप लुकाया ऐ,*
जो वी मन भेंट चढ़ौंदा ऐ, ओह हाजिर रब नूं पौंदा ऐ x 2
वेहड़ा है जे कर साफ दिल दा, विच प्रीतम आके बैहंदा ऐ
इस प्रेम दी दुनिया.....

2. *ऐह प्रेम दा रस्ता बिखड़ा ऐ, खंडे दी धार तों तिखड़ा ऐ,*
सूली ते चढ़ना सौखा ऐ, सच्चा प्रेम कमौणा औखा ऐ x 2
ओह मालिक तां ही खुश होवे, ज्यौंदे ही मरना पैंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनिया.....

3. *ना मिलदा प्रेम बजारां विच, ना पर्वत ना पहाड़ां विच,*
ना सागर दियां लहरां धारां विच, ना शहरां ते ना उजाड़ां विच x 2
उस प्रभु दा मंदिर अंदर है, जो प्रेम करे सो लैंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनिया.....

4. *सच्चा प्रेम जो अंदरों करना चाहे, ओह शीश तली ते धर के आऐ,*
जो सिर चरणां ते धरदा ऐ, ओह मरणो मूल ना डरदा ऐ x 2
कृपाल गुरु जी बक्श लवो, 'अजायब' दु:खड़े सैंहदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनिया.....

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शन के समय दिया गया संदेश

02 जनवरी 1988

पवित्रता बनाए रखें

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

परमात्मा कृपाल ने हमारे ऊपर बहुत दया–मेहर करके हमें दस दिन का मौका दिया। आपको दस दिन यही बात समझाने पर जोर दिया गया है कि हमारे रूहानी जीवन में पवित्रता की कितनी जरूरत है। हमारे दुनियावी जीवन में भी पवित्रता की बहुत जरूरत है, पवित्रता की बहुत महानता है। उनका ही मन शान्त रह सकता है जो विषय–विकारों से भरा हुआ जीवन नहीं जीते। हम अपने ख्याल को दुनिया में जितना भी फैलाते हैं हमारा मन उतना ही अशान्त हो जाता है, हम 'शब्द' से तीसरे तिल से और गुरु प्यार से उतना ही दूर चले जाते हैं।

प्यारेयो! हमें यह घटना याद रखनी चाहिए जिस तरह मेरे गुरु कृपाल ने मेरे मुत्तलिक कहा था, ''इसमें से महक आएगी यह चंदन की तरह महकेगा और वह महक समुंद्र पार कर जाएगी।'' उस समय बहुत प्रेमी पास बैठे थे। मैं कहा करता हूँ कि सतसंगी में से महक आनी चाहिए तभी दूसरा आदमी उस पर मस्त हो सकता है और वह भी फायदा उठा सकता है कि इसमें नाम की खुशबू है। मैं भी इस खुशबू को प्राप्त करूँ यह अच्छा जीवन जी रहा है वह भी आपकी नकल करके अच्छा जीवन जीयेगा।

दुनिया में सन्तमत का मतलब अच्छे बंदे पैदा करना है ताकि वे परमात्मा की भक्ति कर सकें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु पीर नहीं उड़ते, उनके सेवक ही उड़ाते हैं; उनका नाम रोशन करते हैं। सन्तों की इज्जत उनके सेवकों के हाथ में होती है।''

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

अगर कुत्ता अच्छा है तो लोग उसके मालिक की बड़ाई करते हैं। इसी तरह सन्तों के सेवक जितने अच्छे, प्यारे और शान्त होंगे उतनी ही उन सन्तों की संसार में ज्यादा महिमा होगी। वे हमें उतनी ही ज्यादा खुशी देंगे और हमारे ऊपर नाम की बख्शिश करेंगे।

सबसे पहले सतसंगी को यह आदत डाल लेनी चाहिए कि वह बातचीत करते हुए, चलते–फिरते हुए अपनी सुरत को दोनों आँखों के दरम्यान तीसरे तिल पर टिकाकर रखे। जब हमारी आत्मा को तीसरे तिल पर टिके रहने की आदत बन जाती है तो जो जंजीरे इसे नीचे की तरफ खींचती हैं वे एक–एक करके टूटनी शुरु हो जाती हैं। हम सूक्ष्म मंडल में पहुँच जाते हैं जिसका कर्ता–धर्ता जोत निरंजन है।

ऊपर से कारण मंडल का, ब्रह्म मंडल का शब्द आ रहा है आत्मा आसानी से उस शब्द को पकड़कर कारण मंडल में पहुँच जाती है। हमारा मन जितना स्थूल मंडल में हमें तंग करता है, धोखा देता है उतना सूक्ष्म मंडल में धोखा नहीं देता, जितना सूक्ष्म मंडल में धोखा देता है हमारे ऊपर हावी होता है उतना कारण मंडल में जाकर हावी नहीं होता। जब हम कारण मंडल के शिखर पर पहुँच जाते हैं तब हमारी आत्मा इसके पिंजरे से आजाद हो जाती है।

हर सतसंगी को वक्त की कद्र करनी चाहिए। समुंद्र की एक लहर दूसरी लहर का इंतजार नहीं करती इसी तरह मौत किसी का इंतजार नहीं करती। सतसंगियों को बहुत अच्छा मौका मिला है। हमें इंसानी जामें में 'शब्द' मिला है और हमारी रहनुमाई करने वाला गाईड, गुरु मिला है। हमारे सतगुरु ने हमारे हाथ में सिमरन की, शब्द की अंगुली दी है, अब हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उस अंगुली को पकड़े रखें।

आप यह मत सोचें कि जब आप बुराई करते हैं उस समय आपको कोई नहीं देख रहा? प्यारेयो! आपका गुरु स्वरूप आपके अंदर है।

सतसंगी को विश्वास होना चाहिए कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ उसे मेरा गुरु देख रहा है लेकिन वह पर्दे के पीछे खामोश है। काल अपने हाथ से कोई भी मौका नहीं जाने देता। काल अंदर फौरन ही गुरु को जानकारी देता है कि देख! तेरा नामलेवा क्या कर रहा है? तूने इसे नाम दिया है इसकी करतूत तो देख। सतगुरु दया का पुंज होता है, बहुत भरोसे वाला होता है, सतगुरु में बहुत सब्र होता है। सतगुरु कहता है, ''तू इसे और मौका दे, मैं इसे सुधारूंगा।''

प्यारेयो! गुरु के लिए अंदर भी परेशानियाँ खड़ी होती हैं। हमें हमेशा ही पवित्र जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए। आप देखें! अगर पाँच साल का बच्चा भी खेत की रखवाली के लिए बैठा हो तो हमारे अंदर हिम्मत नहीं होती कि हम वहाँ से आम या सेब तोड़ लें। वह परमात्मा गुरु रूप हमारे अंदर होता है लेकिन हम कैसे-कैसे खोटे कर्म कर बैठते हैं। क्या हमें गुरु का डर पाँच साल के बच्चे जितना भी नहीं?

सन्त-महात्मा हमें इस संसार में किसी समाज से तोड़ने के लिए नहीं आते, बुजदिल बनाने के लिए नहीं आते बल्कि वे तो यह कहते हैं कि आप अच्छे इंसान बनें। हम अच्छे इंसान तभी बन सकते हैं जब हम अपने कुल के प्रति भी वफादार बनें। कोई यह न कहे कि यह फलाने कुल में पैदा हुआ है इसके बुजुर्ग भी ऐसे ही होंगे। हमें समाज के प्रति भी मजबूत होना चाहिए कि इनके समाज में अच्छे सन्त पैदा हुए तभी इनके दिल में गुरु के लिए तड़प पैदा हुई इन्होंने नामदान प्राप्त किया।

सन्त यह भी कहते हैं कि हमें अपने देश के प्रति कभी भी कोई बुरा कर्म नहीं करना चाहिए, हमारे अंदर देशभक्ति होनी चाहिए। सन्त-महात्मा हमें हमेशा दुनिया में जीने का तरीका बताते हैं कि दुनिया में रहते हुए हमने रूहानी जीवन भी बनाना है।

हाँ भई! आप इस जगह के बारे में बहुत कुछ सुन चुके हैं पढ़ चुके हैं कि किस तरह दयालु कृपाल ने अपनी ही दया करके यह जगह बनाई। यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है आपने खुद ही इसे बिठाया इसकी रखवाली की और खुद ही इस पर रहमत की। वह रहमत की जो जुबान से ब्यान नहीं की जा सकती। बेशक हम करोड़ो ग्रंथ भी लिख लें फिर भी वह महिमा बयान में नहीं आ सकती। किसी पेड़ का फल खाने से ही उस पेड़ की अच्छाई का पता लगता है।

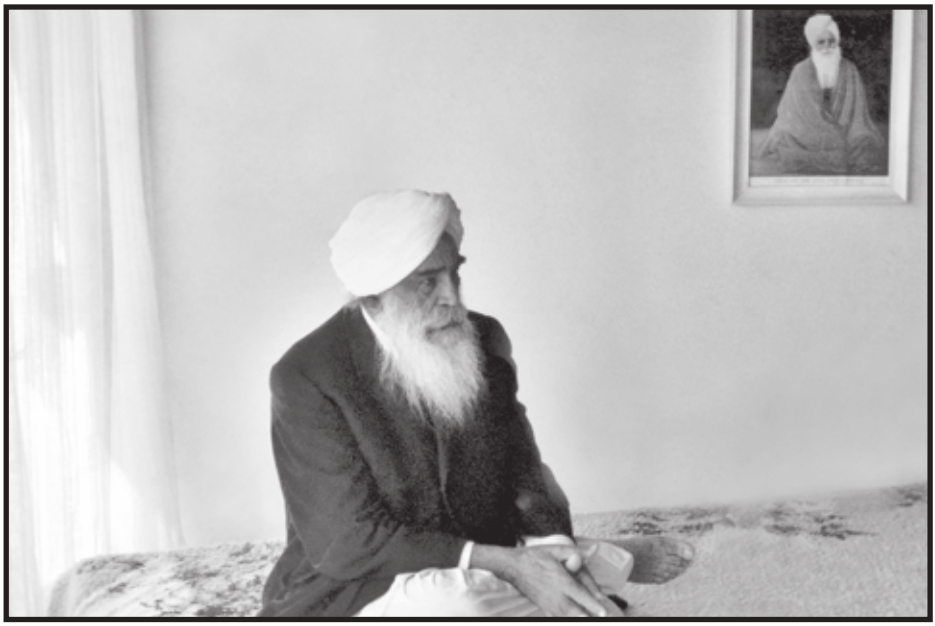

जिन्होंने गुरु के हुक्म को माना है उन्हें ही पता है कि गुरु के हुक्म का क्या स्वाद है। जिन्हें नाम दिया गया है उन सबको दयालु कृपाल ने तारना है, दयालु कृपाल ने उनकी जिम्मेवारी ली हुई है। आप अपने दरबार में उनका इंतजार कर रहे हैं। बहादुरी उन्हीं की है जिन्होंने जीते जी गुरु की आज्ञा का पालन किया और अपने गुरु का काम कर सके। ***

तुलसी साहब की बानी
21 जून 1983

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतगुरु ही मुक्ति दाता है

बगोटा–कोलंबिया DVD No-511(1)

जिस आत्मा के दिल में परमात्मा से मिलने की तड़प है विरह है, जब तक उसे परमात्मा न मिले उसे चैन नहीं आता। जिस तरह बच्चा माँ के प्यार के लिए रोता है, आप चाहे उस बच्चे को जितने मर्जी खिलौने दे दें लेकिन जब तक बच्चे को उसकी माता न मिले उसे चैन नहीं आता, शान्ति नहीं आती।

इसी तरह जिन आत्माओं के अंदर परमात्मा के प्यार की आग भड़क उठती है बेशक आप उन्हें राजगद्दी पर बिठा दें, उनके लिए अच्छे बिछौने बिछा दें, अच्छे खाने खिला दें लेकिन जब तक उन आत्माओं को प्यारा प्रीतम नहीं मिल जाता उन्हें शान्ति नहीं आती। मैं हमेशा कहा करता हूँ:

मैंनू दु:ख आशिकी दा, केहा दु:ख आशकां दा।
आशकां दे ताईं अग्गे आखया पुकारके।
आशिकी बगैर किस्सा बणदा नहीं आशकां दा।
बोलया जे झूठ तुस्सी देखणां विचार के।
ईश्क चतुर चतुराई नाल रोवंदे ने।
नहीं तो बैठ जांवदे ने चुप मन मारके।
सब कोई आपणे सुणावे दु:ख अजायब सिंह।
किसे नू की खास दु:ख कहे संसार ते।।

आपने मुझे शान्ति दी, अपना प्यार दिया। आपने मुझे वह प्यार दिया जिसका मैं अंदाजा भी नहीं लगा सकता अगर आप भी इस प्यार को समझें तो फायदा उठा सकते हैं। मैं इससे पहले संसार की दो यात्राएं कर चुका हूँ। मैंने कभी यह नहीं कहा कि मैं गुरु बनकर आता हूँ। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि मैं अपने गुरुदेव की प्यारी आत्माओं से मिलने के लिए आता हूँ। मैं उनके प्यार में रंगी हुई आत्माओं को देखकर खुश होता हूँ।

मैं जब अपने गुरुदेव का यश गाता हूँ तब मेरे दिल को शान्ति मिलती है, तृप्ति होती है। मैं अपनी भड़की हुई आग को बुझाने के लिए आता हूँ।

जे सतगुरु सज्जन अनुरागी संत चरन सूरति बड़भागी।
कहुँ उनका यह यों बरतंता। सूरति बसे सरन में संता।।

तुलसी साहब से उनका शिष्य हिरदे पूछता है कि कल आपने प्यार से समझाया था कि गुरु आत्मा को कभी काल के हवाले नहीं करता बेशक एक बार ही गुरु के दर्शन क्यों न किए हों, नाम लेना तो बहुत बड़ी चीज है।

मैंने कई बार हरनाम सिंह की कहानी बताई है और यह कहानी सन्तबानी मैगजीन में भी छप चुकी है। हरनाम सिंह मेरे गाँव का हरिजन मजदूर था। उस समय हिन्दुस्तान के लोग हरिजनों से बहुत घृणा करते थे। उसे हमारे गाँव से पचास मील दूर अबोहर में परमपिता कृपाल के दर्शन हुए। महाराज जी कार से जा रहे थे। उसने पहले कभी परमपिता कृपाल को नहीं देखा था, उसे यह भी पता नहीं था कि यह कोई सन्त हैं या महाराज हैं। महाराज जी के दर्शन करने से उसके दिल में तड़प हुई।

महाराज जी का स्वरूप उसकी आँखों में बैठ गया। वह बीड़ी और शराब पीता था। जब आत्मा का वक्त आ जाता है, गाँव वापिस आकर उसने बीड़ी और शराब पीना छोड़ दिया। उसने मुझसे कहा कि मैंने आज ऐसी महान आत्मा को कार में सफर करते हुए देखा है वह स्वरूप मेरे दिल को खींच रहा है। अब मेरा दिल कोई भी ऐब करने के लिए नहीं करता।

कुछ दिनों बाद हरनाम सिंह और चालीस–पैंतालिस आदमी मेरे खेत में मजदूरी कर रहे थे। हरनाम सिंह ने कहा कि वक्त आ गया है अब मैं जा रहा हूँ, मुझे वह महान शख्सियत हवाई जहाज से लेने के लिए आई है। मैं जल्दी से भागकर उसके पास गया और मैंने उससे पूछा कि हरनाम सिंह तुझे क्या हुआ है? उसने कहा कि मेरे लिए हवाई जहाज आ गया

है, एक साल बाद वह महान आत्मा यहाँ भी आएगी। इसी तरह हुआ कि परमपिता कृपाल एक साल बाद वहाँ आए और आपने दर्शन दिए। आप इतने महान थे कि आपने एक बार दर्शन देकर आत्मा की संभाल की।

जो कोइ ऐसी लगन लगावे। सो सूरति सतगुरु में आवे।।

अब आप कहते हैं कि जो आत्मा सन्तों के पास आ जाती है सच्चे दिल से उनके साथ प्यार–मौहब्बत करती है और सन्तों के कहे अनुसार चलती है, सतगुरु उसे क्या देते हैं?

वार काल जहँ बसे ठिकाना। काल पार सतगुरु का थाना।।
जेहि के मद्ध सुरति का बासा। सज्जन जो कोइ करे निवासा।।

अब आप कहते हैं कि दो रास्ते हैं एक दाँया और दूसरा बाँया, सुरत की बैठक तीसरे तिल पर है।

अष्ट कँवल पखड़ी दल माहीं। जो जेहि आस रहे जहँ जाई।।
काल स्याम के बीच रहाई। सेत सुरति सतगुरु की भाई।।

अब आप कहते हैं कि अष्ट दल कँवल में जाकर फैसला होता है कि क्या यह सतगुरु की रूह है, क्या इसने सतगुरु को अपनाया है?

बूझे यह कोइ समझ लखावै। याकी बूझ समझ कोइ पावै।।

अब आप कहते हैं कि जो अंदर जाते हैं वे आँखों से देखते हैं वे ही इस बात को समझ सकते हैं।

यामें जिव का लगे ठिकाना। यह मारग सज्जन का जाना।।

नैन स्याम और सेत के, मद्ध सुरत की लाग।।
जो जैसे सतगुरु मिले, तैसे तिन के भाग।।

अब आप प्यार से कहते हैं अगर काल का गुरु मिल गया तो काल के हवाले हैं क्योंकि सच्चखंड पहुँचा हुआ गुरु भाग्य से ही मिलता है। गुरुओं के भी दर्जे होते हैं कोई मन इन्द्रियों का गुलाम है, सारी जिंदगी अंदर ही नहीं गया और कोई भोगों का आशिक है वह ऐशों–इश्रतों के लिए चेले बना लेता है। ऊँचे भाग्य हों तो ही पूरा गुरु मिलता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसा जमाना आएगा कोई चेला बनने के लिए तैयार नहीं होगा सारे ही गुरु बनने के लिए तैयार होंगे, ईंट उठाओ तो गुरु निकलेगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु जिन्हां का अंधला सिक्ख भी अंधे कर्म करेण।
ओह चल्लण भाणें आपणे नित्त झूठो झूठ बुलेण।।

मैंने कल इस बात पर रोशनी डाली थी कि आप अच्छी तरह सोच–विचार कर नाम लें। क्या इस महात्मा ने कोई कमाई की है, दस–बीस साल परमात्मा की याद में बिताए हैं? कबीर साहब कहते हैं:

हँस हँस पिया न पाया, जिन पाया तिन रोए।
हाँसे खेड्डे पिया मिले, तो कौन दुहागन होए।।

जो सूरति सतगुरु को चाही। जैसी डोरि ऊँट की नाईं।।
जैसे ऊँट अगाड़ी जावै। सब कतार पीछे चलि आवै।।
बाँध डोरि पूँछि के माहीं। सब कतार पीछे चलि आई।।
सतगुरु सूरति मूल ठिकाने। ज्यों कतार जिव सुरति समाने।।

अब तुलसी साहब अपने चेले को मिसाल देकर समझाते हैं जिस तरह ऊँटों की कतार होती है। सारबान अगले ऊँट की डोर अपने हाथ में रखता है पीछे पूँछ के साथ दूसरे ऊँट बाँध देता है। वह अकेला ऊँट ही सारी कतार को लेकर चलता है। इसी तरह एक सतगुरु आता है और सारी आत्माओं को खींचकर अपने धाम ले जाता है।

हम जो रोजाना अभ्यास की प्रैक्टिस करते हैं, सतगुरु हमारी डोरी शब्द के साथ जोड़ देते हैं ताकि हम आखिरी वक्त इस डोर को न छोड़ दें, अपनी प्रैक्टिस न भूल जाएं। एक कुम्हार राजा के महल में रेत डालने के लिए जा रहा था, वह गधियों को हाँकते हुए कह रहा था, ''चल बीबी चल भैंणे।'' किसी ने उससे पूछा कि तू यह क्या बोल रहा है? कुम्हार ने कहा, ''हम लोग खुल्ला बोलने वाले हैं। मैंने बादशाह के महल में जाना है, मैं प्रैक्टिस कर रहा हूँ कि मेरे मुँह से अच्छा वचन ही निकले।''

जो सूरति सतगुरु दृढ़ लावै। सुनु हिरदे वह वही समावै।।

तुलसी साहब हिरदे से कहते हैं, ''देख प्यारेया! जहाँ आसा तहाँ वासा।'' हमारे वेद–शास्त्र भी यही कहते हैं कि जिसका सतगुरु के साथ प्यार है उस सुरत ने सतगुरु में जाकर ही समा जाना है। सतगुरु परमात्मा का रूप होता है उसमें परमात्मा बसता है। वह उस पोल पर बैठकर काम करता है, वह हमारी आत्मा को लेकर परमात्मा में ही समा जाएगा।

यही भाँति से चले न दावा। और भाँति सब मार गिरावा।।
तप संजम जोगी बहु पाले। ये मारग में भये बिहाले।।

अब आप कहते हैं कि सतगुरु की भक्ति ही संसार समुंद्र से निकलने का एक रास्ता है। सतगुरु का प्यार हमें दुनिया के प्यार से निकालकर ले जा सकता है। योगियों ने बहुत तप और साधन किए, प्राणों पर काबू पाने वाली भी बहुत सी क्रियाएं की लेकिन वे मुक्ति प्राप्त नहीं कर सके।

जो कोइ समझि करे यह लेखा। बिन सतगुरु नहिं मिले बिबेका।।

हमें पूरे सतगुरु के बिना विवेक नहीं मिलता, रास्ता नहीं मिलता।

ज्यों कतार रहे ऊँट की, अगले ऊँट बँधाय।
यों सुरति सतगुरु कहें, जब जिव वही समाय।।

यह स्वामी सज्जन की बाता। यहि बिधि भाखे सभी सनाथा।।
सब संतन की देखी बानी। सबने कही बिमल मति छानी।।

अब तुलसी साहब का शिष्य हिरदे पूछता है कि मैंने सारे सन्तों की बानियाँ देखी है कि सब सन्तों ने सतसंग की, नाम की और गुरु की महिमा गाई है। गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, सतसंग के बिना हमारी तहकीकात मुक्कमल नहीं होती और नाम के बिना मुक्ति नहीं।

अब वह मोको भेद बतावो। करमी जीव काल को दावो।।

हिरदे कहता है हे दयाल सतगुरु! अब आप मुझे यह बताएं कि जो लोग जप–तप, पूजा–पाठ करने में लगे हुए हैं काल उनकी क्या हालत करेगा, वे कहाँ जाएंगे?

सज्जन का भाखा निरबारा। करमी जीव काल को जारा।।

अब आप कहते हैं कि लोग बहुत जप–तप कर रहे हैं बहुत मुश्किलें उठा रहे हैं आखिर वे काल का खाज बन रहे हैं।

उनके प्रान कहाँ होइ जाई। कहो स्वामी मोहिं बरनि सुनाई।।

अब हिरदे कहता है कि मुझे उन लोगों की हालत बताएं कि उनके प्राण निकलकर कहाँ जाएंगे, आत्मा कहाँ जाएगी? क्योंकि हर समाज कर्मकांड और रीति रिवाज पर जोर दे रहा है।

काल घाट रोके केहि द्वारे। सब जीवन को खाय बिडारे।।

अब हिरदे तुलसी साहब से कहता है कि काल किस तरह उनके द्वारे रोक लेता है किस तरह उन आत्माओं को खाता है? मुझे जरा प्यार से बता दें ताकि मुझे समझ आ जाए।

कौन राह से जीव नसावै। कैसे सकल जगत को खावे।

काल किस राह से आत्मा को लेकर जाता है, किस तरीके से इन आत्माओं को खाता है और किस तरह इन्हें अपनी जाड़ो में चबाता है।

यह तन में केहि भाँति समावे। बदन बीच वह क्योंकर आवे।।

हिरदे कहता है कि दुनिया कहती है कि यह शरीर हाड़–माँस का है। मैं यह समझना चाहता हूँ कि काल किस तरह इस जिस्म में आ जाता है और किस तरह जिस्म में से आत्मा को पकड़ लेता है?

प्रान निकारे आय के, घेरे घट के माहिं।
एक जीव बाचे नहीं, धरि धरि सब को खाय।।

आप कहते हैं कि मौत खुद ब खुद नहीं होती, मौत का कोई न कोई कारण बनता है। गुरु की शरण वाले को छोड़कर काल अंदर ही हर जीव को घेर लेता है।

करता कौन जीव का होई। बिन जाने जग जाय बिगोई।

अब आप कहते हैं कि जीव को यह पता नहीं कि कौन हमारा करता है, कौन हमारा मालिक है, हम कहाँ से आए हैं और हमने कहाँ जाना है? जो इन्हें खा रहा है ये उसी को पूज रहे हैं। गीता में कृष्ण भगवान ने स्पष्ट लिखा है: *कालो अस्मि।* मैं ही जीवों को खाने वाला हूँ।

जितने भी अवतार आते हैं सारे काल के अवतार होते हैं, ब्रह्म के अवतार होते हैं। काल भी दुनिया में कुशासन नहीं फैलने देता वह दुनिया को अनुशासन सिखाने के लिए आता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

कृष्ण सदा अवतारी उदो, कित लग तरे संसारा।

आप कहते हैं कि अवतार भी जन्म–मरण के चक्कर में हैं। जो लोग इन्हें पूजते हैं वे किस तरह मुक्त हो सकते हैं?

कहँ से आय कौन उपजाया। क्योंकर देह धरी जग काया।।

इन्हें यह पता नहीं कि हम देह धारण करके क्यों आए हैं, हम कहाँ से आए हैं और हमने कहाँ जाना है? जिस समाज में पैदा होते हैं बचपन से वही रीति–रिवाज पकड़ लेते हैं अगर कोई हमें इससे ऊपर की बात बताने के लिए आता है तो हम उसकी बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं होते अपनाना तो क्या था?

मेरे पिता जी को सारी जिंदगी यही वहम रहा कि मेरा लड़का गलत तरफ जा रहा है। मैंने समाज के रीति–रिवाज बहुत प्रेम से किए लेकिन जब आत्मा को शान्ति नहीं आई तो आखिर मैं गुरुदेव की खोज में लग गया। पिता जी ने कहा, ''मैं देखूंगा जब तेरी भक्ति तारेगी?'' मेरे पिता जी ने अपनी जिंदगी में सिक्खों के रीति–रिवाज के मुताबिक सत्तर अखंड पाठ करवाए थे, एक अखंड पाठ करवाने में ही काफी पैसा लग जाता है।

जब मेरे पिता जी का अंत समय आया तो किसी भी अखंड पाठ ने उनकी मदद नहीं की। आखिर उस समय मदद करने वाला सावन–कृपाल पहुँचा। आप तीन दिन पहले ही बताने लगे कि मुझे दो हस्तियों के दर्शन होते हैं, उनके सफेद कपड़े और सफेद दाढ़ी है। मैंने उनके आगे तस्वीर की तो वह कहने लगे, ''हाँ यही हैं।''

मैंने परमपिता कृपाल से यही कहा था कि पिता जी बहुत बुजुर्ग हो चुके हैं और वे इस बात को नहीं मानते। आप किसी और पर दया करें या न करें लेकिन इन पर जरूर दया करें। मेरे पिता मुझे ताना मारा करते थे लेकिन तीन दिन पहले उन्होंने मेरी पीठ थपथपाकर कहा, ''बेटा! मुझे अब पता लगा है कि तू सही तरफ जा रहा था, तेरी भक्ति मुझे तार रही है।''

मेरे पिता जी मेरे दादा के बारे में बताया करते थे कि मेरे दादा जी ने भी सिक्खी के सारे रीति–रिवाज किए थे। हिन्दुस्तान में अड़सठ तीर्थों की बहुत महानता है वह सब तीर्थों पर गए, जब तीर्थ से वापिस आते तो काफी दान–पुण्य करते गरीब लोगों को खाना खिलाते लेकिन मालिक की

मौज किसी कर्मकांड ने उनकी मदद नहीं की। वह हमारे घर में ही कुत्ता बनकर आए। हमें क्या पता था कि यह हमारा ही बुजुर्ग है।

वह कुत्ता आमतौर पर चारपाई पर बैठता, अच्छा खाना खाता और मंगलवार के दिन व्रत रखता क्योंकि वह पहले भी अपनी जिंदगी में व्रत रखता था। मंगलवार के दिन वह अपनी रोटी उठाकर बाहर छिपा आता था। सारा परिवार परेशान था कि इस कुत्ते को इतना ज्ञान है इसे कैसे पता लगता है कि आज मंगलवार है। वह हम सबके ऊपर दवाब रखता अगर हम घर में आने वाले को कोई चीज देते तो वह उसे पकड़ता कि मेरे घर से चीज लेकर क्यों जा रहा है?

आखिर जब बाबा बिशनदास जी हमारे घर आए तो मेरे पिता जी ने कहा कि हमें इस कुत्ते की समझ नहीं आती कि यह चारपाई के बगैर नीचे नहीं बैठता, किसी को कोई चीज दें तो यह फौरन उसे पकड़ता है। उस कुत्ते की और भी बातें बताई। बाबा बिशनदास जी कुत्ते की तरफ अच्छी तरह देखकर हँसते हुए कहने लगे, ''लाल सिंह! तू इसे पहचानता है, यह तेरा पिता है।'' बाबा बिशनदास की ऐसी बहुत सी बातें थी जिन पर यकीन किया जा सकता था क्योंकि आप कमाई वाले थे। वह कुत्ता जितनी देर जीवित रहा पिता जी ने उसका बहुत आदर किया और धार्मिक रीति–रिवाज के मुताबिक ही उसका आखिरी क्रियाक्रम किया।

जब मैंने परमपिता कृपाल के आगे उस कुत्ते की बात की तो आपने कहा, ''कर्मकांड करने वालों की यही हालत होती है। जहाँ उनकी आशा होती है वे वहीं जाते हैं।'' किसी कर्मकांड ने उसकी मुक्ति नहीं की आखिर परमपिता कृपाल ने उसकी मुक्ति की।

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''सतसंगी की कुल तर जाती है, अच्छी कमाई वाले सतसंगी की कई कुलें तर जाती है और गुरुमुख की अनेकों ही कुलें तर जाती हैं।''

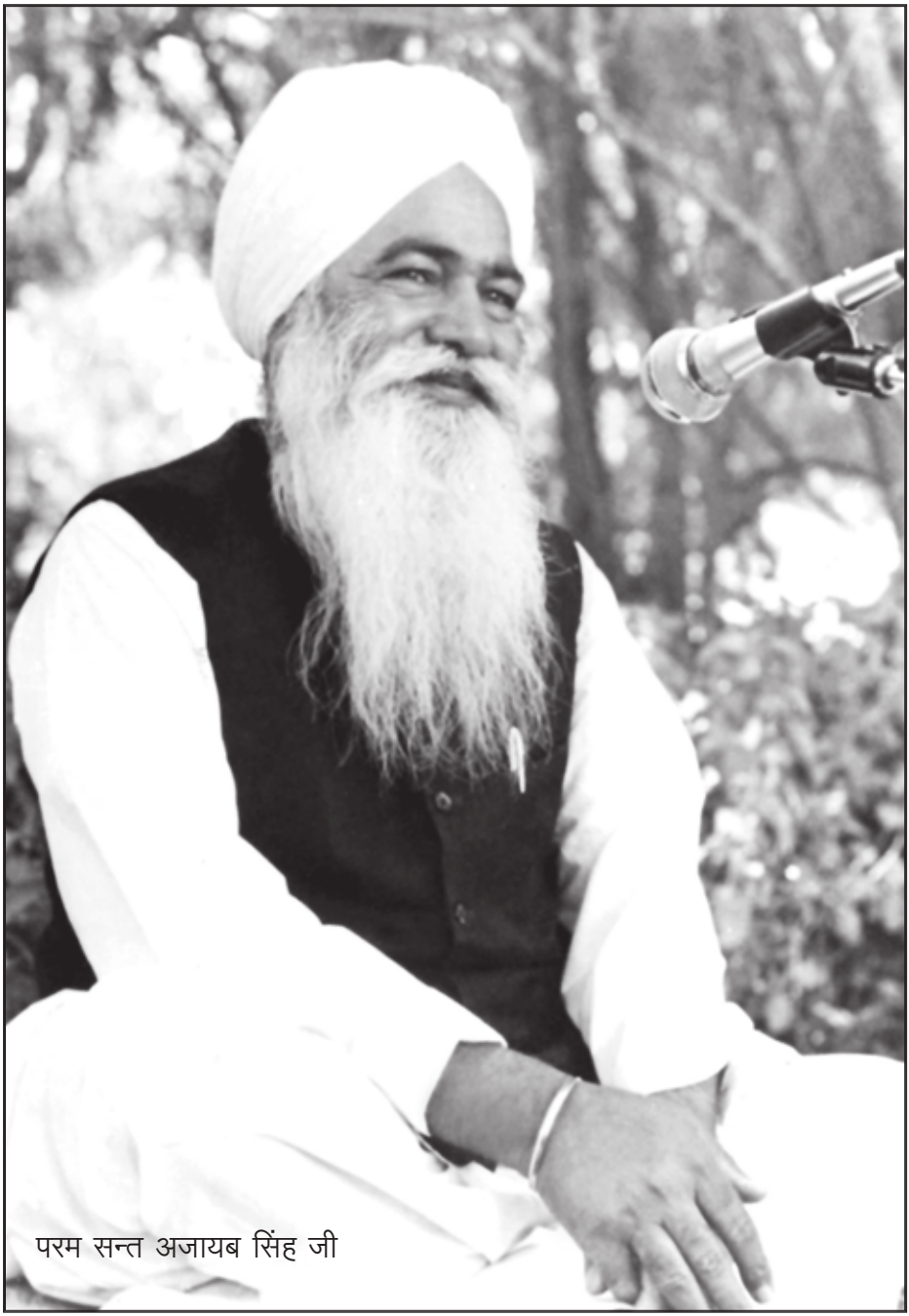

परम सन्त अजायब सिंह जी

पाँच तत्त तन रहा बँधाई। उपजि मरे चौरासी माहीं।।
याको सब यह सबब सुनावो। स्वामी यह धोखा दरसावो।।
पत मत हीन दीन हौं दासा। चरन कँवल की निसदिन आसा।।

काल ने आत्मा के ऊपर पाँच तत्वों का कोट पहना दिया है, आत्मा अपने घर को भूल गई है। मैं तेरे चरणों का आसरा रखकर तेरे आगे सवाल करता हूँ कि तू मुझे प्यार से समझा।

और आस बिस्वास न आवे। निस दिन सूरति चरन समावे।।

हिरदे कहता है कि मुझे और किसी के ऊपर विश्वास नहीं और किसी से आशा नहीं अगर भरोसा है तो आपके ऊपर है।

ज्ञान विवेक एक नहिं जानी। ऊपर चरन सुरति कुरबानी।।
दिल दृढ़ मेहर सरन में होई। चित संसय मेटो प्रभु सोई।।
दिल दुविधा मोरे भई, स्वामी सरन तुम्हार।
जार जक्त कैसे पड़े, कैसे जीव उबार।।
काल बली परचंड कहावे। यासे जीव बचन नहिं पावे।।
छल बल दाँव करे कई भाँती। करे कोप जिव पर दिन राती।।

काल बड़ा प्रचंड है, बलवान है। यह जीवों के साथ बहुत छल करके जीवों को भ्रम में रखता है।

नहिं कोइ ठौर बचन जिव पावे। जहाँ जाय तहँ जाय समावे।।
स्वर्ग मित्त पाताल न बाचे। को है जबर सरन जेहिं याचे।।

आप कहते हैं कि जहाँ जीव जाता है वहाँ काल है। जीव स्वर्गों में जाए, वैकुंठों में जाए वहाँ भी काल है। जब वहाँ पुण्यों की मियाद खत्म हो जाती है तो जीव को धक्के मारकर बाहर निकाल दिया जाता है।

भटकट फिरे जुगन के माहीं। कालबली से पार न पाई।।
यह कइ दाँव लगाये फंदा। कर्मी जीव जक्त का अंधा।।
मारे जो जोरावर कोई। जबर संग कछु जोर न होई।।
काल बड़ा बरियार कहावे। बिकट बिपति करि जीव सतावे।।

काल जबर जुलमी बड़ा, खड़ा रहे मैदान।।
कर कमान खैंचे फिरे, मारे गोसा तान।।

काल जीव को इस तरह देखता रहता है जिस तरह शिकारी तीर कमान कसे रखता है कि कब मेरा शिकार आगे निकले। काल हमेशा जीव को कष्ट देता है कभी बीमारी, कभी दु:ख और मुसीबतों में फँसाता है।

ज्यों बन भेड़ी सिंघ अहारा। जैसे जीव काल का चारा।।
डाके सिंघ भेड़ के माहीं। ऐसे डाक काल जिव खाई।।
यह स्वामी मोहिं कहो बुझाई। कौन चरित्तर काल कसाई।।
या की कर कूँची बतलावो। भिन्न भिन्न कहि करि समझावो।।
केहि बिधि जाय जीव को घेरे। केहि मारग से सूरति फेरे।।

जिस तरह भेड़ो के झुंड में कोई शेर आ जाए, जब शेर दहाड़ता है तो भेड़ें सहम जाती हैं। शेर जिसे चाहे अपना भोजन बना लेता है यही हालत आत्मा की है जब काल दिखाई देता है उस समय जीव के दस्त निकल जाते हैं, उससे बोला नहीं जाता। वह जैसे भी चाहे आत्मा को अपना खाज बना लेता है। आत्मा सहमी होती हैं, हमेशा मौत का डर लगा रहता है।

इसलिए आप प्यार से समझाते हैं कि गुरु ही इन आत्माओं को परमात्मा से मिलवाए तो मिलवाए और काल से बचने की कोई राह नहीं।

***

गुरु नानकदेव जी की बानी
25 जनवरी 1987

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम का रंग

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान DVD No-529 (1)

जब गुरु नानकदेव जी हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में 'शब्द–नाम' का प्रचार करते हुए हिमालय के सुमेर पर्वत पर गए तब आपकी नजर सिद्ध–मंडली पर गई। उन लोगों ने घर–बार छोड़कर जंगलों में डेरे लगाए हुए थे, वे लोग पेड़ो के फल और कंदमूल खाने में ही मुक्ति समझते थे। उस समय गोरखनाथ, भृतहरि, गोपीचंद और भी कई योगी मशहूर थे। बहुत से राजा–महाराजा उन योगियों के शिष्य बने। राजा–महाराजाओं के शिष्य बनने के कारण और पब्लिक ने भी योग धारण कर लिया था।

सिद्धों और योगियों की उम्रें बहुत लम्बी थी, गुरु नानकदेव जी की उम्र छोटी थी। सिद्धों को यह अहंकार था कि यह बालक हमें क्या समझा सकता है, हमारी उम्र बड़ी है। हम तो अपने योग के बल से इतनी ऊँची जगह पर पहुँचे हैं लेकिन यह बालक यहाँ कैसे आ गया? इसके साथ दो आदमी बाला और मरदाना भी हैं।

सिद्धों को सुमेर पर्वत पर आए हुए बहुत समय हो चुका था। जब सिद्धों की नजर गुरु नानकदेव जी पर पड़ी तो उन्होंने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि मातलोक का क्या वरतारा है, वहाँ क्या हो रहा है? उन्होंने और भी कई तरह के सवाल किए कि परमात्मा कहाँ है, किसकी शरण प्राप्त करके परमात्मा से मिला जा सकता है? गुरु नानकदेव जी उनके सवालों का जवाब बहुत प्यार और विस्तार से दे रहे हैं, गौर से सुनें:

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सिद्धों! दुनिया में सच का अकाल पड़ गया है और झूठ बोलना प्रधान हो गया है। आत्मा पापों की दलदल में दब चुकी है पापों के नीचे आकर जीव भूतों की तरह फिर रहे हैं।''

बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सतयुग में जो आत्माएं संसार में आई थी वे अपनी आबरू साथ ले गई हैं। सतयुग में लोग सच धारण करते थे थोड़े से इशारे से ही हमारा मन परमात्मा की तरफ लग जाता था, सच और विवेक बुद्धि धारण करने से जीव परमात्मा में मिल जाते थे। अब सिर्फ दाल ही बची है, यह किस तरह उग सकती है?''

सतयुग और त्रेता जग्गी द्वापर पूजा चार।
तीनों जुग तीनों दड़ कल केवल नाम उद्धार।।

जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ।।

आप कहते हैं, ''सारे दाने दाल बन गए हैं अगर एक भी दाना साबुत हो तो उग सकता था। पहले संसार में ऋषि–मुनि अच्छे थे वे खुद जप–तप करते थे और जीवों से भी जप–तप करवाते थे। इस समय अगर कोई धनी आदमी यज्ञ करवाना भी चाहे तो यज्ञ करने वाले नहीं हैं। बीज बोने के लिए ऋतु होनी चाहिए अगर हम बेमौसम बीज बोएंगे तो नहीं उगेगा।''

सतयुग में हम सच धारण करके, त्रेता युग में यज्ञ–होम करके और द्वापर में पूजा करके मुक्ति प्राप्त कर लेते थे। उन युगों में ऋषि–मुनि अच्छे थे लेकिन इस समय ऋषि–मुनि संसार में विधि पूर्वक यज्ञ नहीं करवाते। अब सतयुग वाले ऋषि नहीं, कलयुग है। कलयुग में 'शब्द–नाम' की कमाई में ही मुक्ति है। हम जिस युग में पैदा हुए हैं वही साधन अपनाकर कामयाब हो सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कलयुग में कर्म–धर्म न कोई, नाम बिना उद्धार ना होई।

नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ।।

जिस तरह कोरे कपड़े पर फिटकरी न लगाएं तो उस पर पक्का रंग नहीं चढ़ता उसी तरह जब तक हम सतगुरु के पास जाकर आत्मा को नाम की खुराक नहीं देते तब तक हमारे ऊपर **नाम का रंग** नहीं चढ़ता।

भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ।।

सबसे पहले हमारे दिल में परमात्मा के लिए भय हो, हमें बुरे कर्म करने से पहले शर्म आनी चाहिए कि मैं एक इंसान हूँ, क्या यह बुराई मेरे लिए शोभादायक है? हम जानते ही हैं कि जब हम परमात्मा से डरते हैं तो पाप करने में शर्म महसूस करते हैं, नाम की कमाई भी करते हैं। जब कपड़ा साफ होगा तो **नाम का रंग** चढ़ेगा और हम कामयाब भी होंगे। बेशक कहने वाले कह देते हैं:

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

ऐसे विचार कुमार्ग पर ले जाने वाले हैं। हम जो कर्म करते हैं वे हम खुद ही भोगते हैं। हम अपने रिश्तेदारों, यार–दोस्तों से डरते हुए उनके खिलाफ कोई बुरा काम नहीं करते कि कहीं ये हमसे नाराज न हो जाएं? लेकिन हम परमात्मा से नहीं डरते कि वह भी हमसे नाराज हो सकता है।

नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ।

जिस पर एक बार नाम का, भक्ति का रंग चढ़ जाता है फिर वह झूठ और पाप में नहीं फँसता। कबीर साहब कहते हैं:

जिनको सतगुरु रंग दिया कभी ना होय कुरंग।
दिन दिन बाणी आगरी चढ़े सवाया रंग।।

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु।।
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु।।

गुरु नानकदेव जी सिद्धो से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! लोभ इस युग का राजा है, झूठ इस युग का प्रधानमंत्री है और काम इनको सलाह देने वाला मुखिया है। जब कोई न्याय करना हो तो काम को बुलाते हैं। इनका चेयरमैन लोभ है। कलयुग में कामी, क्रोधी, लोभी जीव लोगों को उपदेश देंगे लेकिन खुद इन पाँच डाकुओं से ग्रस्त होंगे।''

अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु।।

अब आप दुनिया की हालत बयान करते हैं, ''किसी को शब्द–नाम का, सतसंग का और महात्मा का ज्ञान नहीं। महात्मा हमारे ऊपर दया करते हैं, महात्मा के दिल में हमारे लिए आदर और प्यार है। ज्ञान के बिना दुनिया अंधी है और पापों के तले दबकर मुर्दे की तरह हो गई है।''

गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''इस युग में जो अपने आपको ज्ञानी, आचार्य कहलवाते हैं वे दुनिया के पदार्थों के लिए नाचते हैं। वे पिछले महात्माओं के स्वाँग बना लेते हैं जिस तरह नाचने वाले लोग राम और कृष्ण के स्वाँग बना लेते हैं और उनके चेले साज बजाते हैं।''

हम जानते हैं अगर हम शेर की खाल पहन लें तो हमारे अंदर शेर वाले गुण नहीं आ जाते। हम जो हैं सो हैं अगर हम किसी महात्मा या पीर–पैगम्बर का स्वाँग धारण कर लें तो हमारे अंदर वह शक्ति नहीं आती जो उस महात्मा या पीर–पैगम्बर में थी।

ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु।।

आप कहते हैं, ''ये लोग सभाओ में बहुत ऊँचा–ऊँचा गाते हैं। पिछले जमाने के सूरमा, योद्धा और बहादुरों के गीत गाते हैं। शब्द–नाम का कोई प्रचार नहीं होता।''

कुछ लोगों ने परमपिता कृपाल से पूछा कि दुनिया में शान्ति किस तरह हो सकती है? आपने बड़े प्यार से जवाब दिया, ''सन्त–महात्माओं, गुरु–पीरों ने जो ग्रंथ लिखे हैं अगर हम उन पर अमल करें तो दुनिया में अमन हो सकता है।''

मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु।।

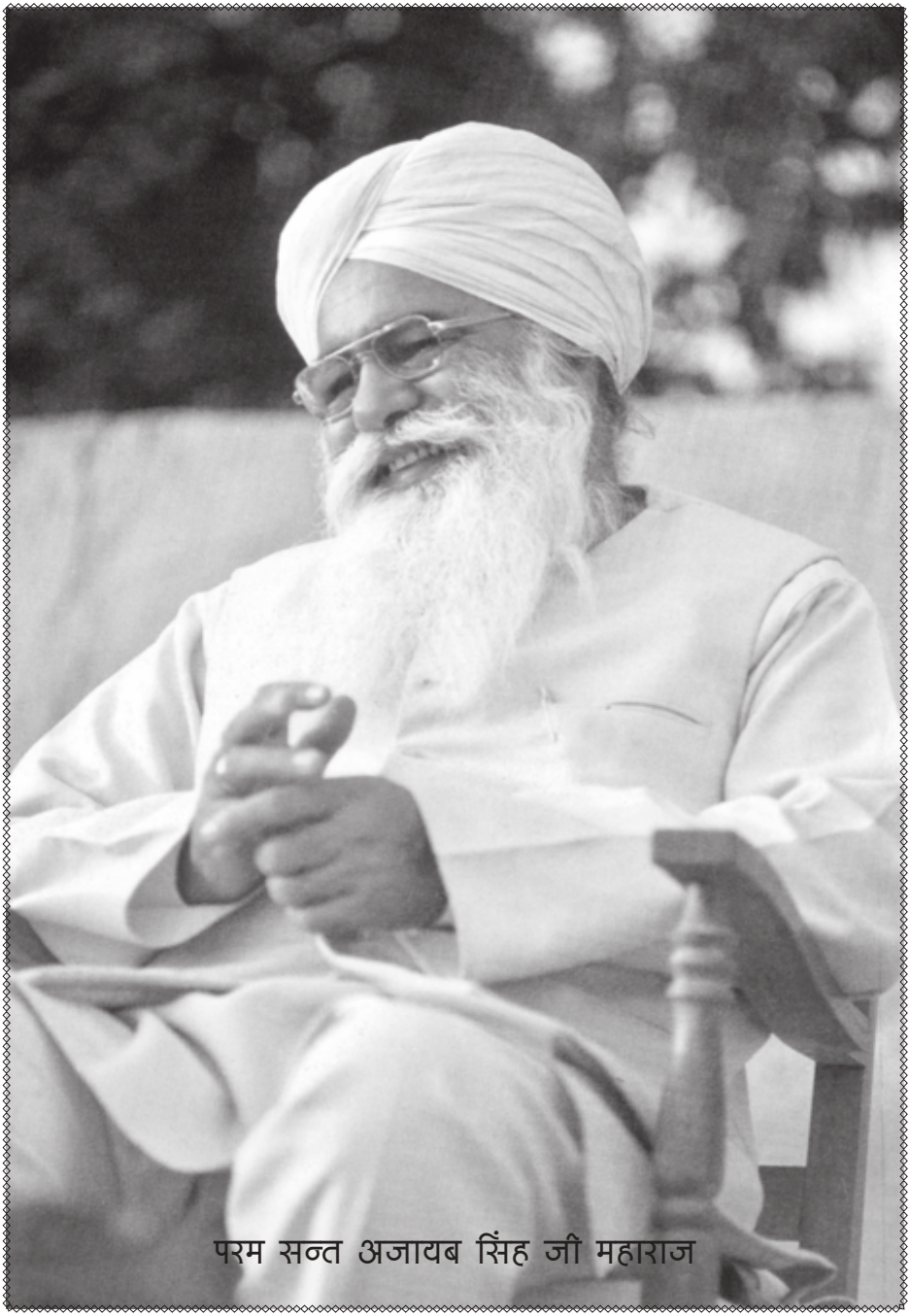

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो अति मूर्ख होंगे उन्हें सुरत–शब्द के अभ्यास का ज्ञान नहीं होगा लोग उन्हीं को पंडित कहेंगे। जिन्हें नाम का ज्ञान नहीं वे परमात्मा की भक्ति क्या करेंगे? बल्कि वे तकरार करते हैं कि इसमें यह कमी है, उसमें वह कमी है। ऐसे लोग समाजों में भेदभाव पैदा करते हैं और एक–दूसरे को आपस में लड़वाते हैं। कलयुग में मियाँ–बीवी सिर्फ भोग–वासना के लिए ही एक–दूसरे से प्यार–मौहब्बत करेंगे।''

धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु।।

आप कहते हैं, ''इस युग में जो अच्छे आदमी होंगे वे धर्म तो जरूर करेंगे लेकिन उसका फल गँवा लेंगे। वे लोग उसी समय अच्छे कर्म का फल माँगेगे। उसी समय महात्मा से कहेंगे कि आप हमारे ऊपर दया करें, हमारा बच्चा राजी हो जाए, हमारा कारोबार अच्छा चल पड़े, हमारा शरीर तंदरूस्त हो जाए, हम मुकद्दमा जीत जाएं। जो इससे भी ज्यादा समझदार हैं वे कहते हैं क्या हमें मुक्ति मिल जाएगी?''

मैं बताया करता हूँ कि गणेश गढ़ गाँव में एक आदमी की टाँग पर काफी चोट लगी। वह सतसंग में नहीं आ सकता था। उसने कहा, ''अगर आप महाराज जी को यहाँ ले आएं तो मैं आपका धन्यवादी होऊँगा।'' मैं परमपिता कृपाल के साथ उस आदमी के घर गया। उन्होंने चाय बनाई, चाय पिलाने से पहले उस आदमी ने कहा, ''पहले मेरी चोट वाली जगह पर दृष्टि डालें।'' आप सोचकर देखें! वह चाय कितने की होगी और माँग कितनी बड़ी है? हम किसी को नि:स्वार्थ एक कप चाय भी नहीं पिला सकते, उसमें भी कोई न कोई माँग रखते हैं?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''परमात्मा हम पर दया–मेहर करता है हमें धन–पदार्थ देता है अगर हम दायें हाथ से दान करें तो बायें हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए। हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें किसी की मदद करने के काबिल बनाया।''

जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु।।

सिद्धों को यही घमंड था कि नानक जी गृहस्थी हैं, हम योगी हैं हमने कभी औरत की शक्ल भी नहीं देखी। गुरु नानकदेव जी उन लोगों को मुखातिब करके कहते हैं, ''घर की औरत छोड़कर क्या रोटी के बिना गुजारा हो गया? रोटी के लिए कितनी औरतों के आगे हाथ फैलाने पड़े। घर की जायदाद छोड़कर दूसरो की जायदाद पर नजर रखी, इसके लिए कितने झगड़े करने पड़े। आप अपने आपको यति तो कहलवाते हैं लेकिन आपको युक्ति का पता नहीं कि किस युक्ति को धारण करके यति होते हैं।''

सन्त हमें समझाते हैं कि प्यारेयो! अपना गृहस्थी जीवन संयम में बिताएं। गुरु साहब कहते हैं: *एक नारी सदा यति* / जिससे शादी हो गई उसी के साथ संबन्ध है तो हम यति से कम नहीं। गृहस्थ में हम खाने–पीने और पहनने वगैरहा की सब जरूरतें पूरी कर सकते हैं।

फर्ज करें कि एक आदमी बाजार जा रहा है, वहाँ अच्छे–अच्छे खाने रखे हैं। मन कहता है कि 'ये खाने खाने हैं' लेकिन उसके पास पैसे नहीं। मन अड़ियल है उसे झूठ बोलकर माँगना पड़ेगा या चोरी करनी पड़ेगी। अगर हम गृहस्थ के नियमों का पालन करते हुए अपने दस नाखूनों की किरत करें तो हम सब चीजें आसानी से खरीद सकते हैं।

सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै।।

अब गुरु नानकदेव जी महाराज सिद्धों से कहते हैं कि मैं जिससे भी मिलता हूँ वह कहता है, ''मैं पूर्ण हूँ, मैं सही हूँ।'' कोई भी अपने आपको कम नहीं समझता।

पति परवाणा पिछे पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जिंदगी बहुत लम्बी होती है। जो अपने आपको पूर्ण कहता है क्या उसने जिंदगी में कोई कमाई की है,

साधना की है, दुनिया में उसकी कितनी इज्जत है? अगर इस दुनिया में हमारी इज्जत है तो परमात्मा भी हमें मान देता है।

महात्मा दिलों पर राज करते हैं। गुरु नानकदेव जी को आए हुए पाँच सौ साल और क्राईस्ट को आए हुए दो हजार साल हो गए हैं। आज भी हम उन्हें प्यार से याद करते हैं, सुबह उठकर उनका नाम लेते हैं। हम उन महात्माओं वाले गुण धारण करें तो हम भी पूर्ण हो सकते हैं।

वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा ने मर्यादा बनाई है किस तरह जीव–जन्तु पैदा होंगे और किस तरह लय होंगे। किस तरह सूरज–चन्द्रमा दुनिया को रोशनी देंगे इनका रखवाला वही परमात्मा है।''

सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ।।

आप कहते हैं, ''संसार में आकर सब जीवों ने अपने कर्मों के मुताबिक छलाँगे लगाई कि मैं बड़ा बनूँ, मैं ज्ञानी–ध्यानी बनूँ और मेरी हुकूमत हो लेकिन यह सब परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है। जिसका जैसा कर्म है उसको परमात्मा वैसा ही फल देता है।''

अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे।।

आप कहते हैं, ''मालिक के दरबार में हमारी जाति व हुकूमत नहीं जाएगी। वहाँ हमारे परिवार का और जान पहचान वाला भी कोई नहीं होगा। वहाँ सब नये ही मिलेंगे वहाँ कोई भी हमारा स्वागत नहीं करेगा। वहाँ सिर्फ उन्हीं लोगों का स्वागत होगा जो परमात्मा की भक्ति करते हैं।''

जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ।।

गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! उस सच्चे दरबार में पहुँचकर ही अच्छे और बुरे का पता चलता है अगर उस दरबार

में हमारी इज्जत है तो हम अच्छे हैं अगर वहाँ कोई हमारी इज्जत नहीं करता और यमदूत सिर पर खड़े हैं तो हम बुरे हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

लेखा देना सहेला, जे मन सच्चा होए।
उस सच्चे दीवान में पल्ला न पकड़े कोए।।

धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''यह हमारे अपने बस में नहीं कि हम जंगलों–पहाड़ों में फिरें, नाम की कमाई करें या परमात्मा की भक्ति करें। यह सब कुछ परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है। परमात्मा की भक्ति वही करते हैं जिनकी किस्मत में परमात्मा धुर दरगाह से लिख देता है कि तुमने मेरी भक्ति करके मेरे साथ मिलाप करना है।''

एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ।।

जिन महात्माओं का परमात्मा से मिलाप हो जाता है वे ही परमात्मा की मौज को समझ सकते हैं। गुरु नानकदेव जी परमात्मा से कहते हैं, ''तूने इस संसार की अजीब रचना की है कोई तेरी भक्ति में लगा हुआ है तो कोई दुनिया की रंग रलियों में खोया हुआ है, इन जीवों के अपने अख्तियार में कुछ भी नहीं कि हम भोगी बनें या परमात्मा के भक्त बनें।''

इकना नो तूँ मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ।।

आप परमात्मा के आगे विनती करते हैं, ''हे परमात्मा! यह तेरी अजीब लीला है कि तू कुछ जीवों को इंसानी जामें में आकर मिल लेता है, उनके अंदर विरह, तड़प और अपने मिलने का शौंक पैदा कर देता है। तू जिन जीवों को भुल्लड़ बना देता है वे शब्द–नाम की कमाई की तरफ नहीं आते, चाहे उन्हें जितना मर्जी समझा लें वे विरोध ही करते हैं।''

गुर किरपा ते जाणिआ जिथे तुधु आपु बुझाइआ।।

गुरु नानकदेव जी सिद्धों से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! हमें यह समझ हमारे सतगुरुओं ने दी कि किस तरह अंदर जाकर परमात्मा से मिलना है। यह हमारे गुरुओं की ही कृपा है कि उस परमात्मा ने हमें अंदर से ही ज्ञान दिया कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं और गुरु के बिना नाम नहीं मिलता।''

सहजे ही सचि समाइआ।। सहजे ही सचि समाइआ।।

आखिर में गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जब हमें नाम मिल जाता है गुरु की शरण प्राप्त हो जाती है तब हम सतसंग में जाकर अपनी कमियाँ निकालना शुरु कर देते हैं। हमारे अंदर नाम जपने का शौंक पैदा हो जाता है और हम स्वाभाविक ही परमात्मा में समाकर अपने जीवन को सफल कर लेते हैं।'' ***

14 जनवरी 1980

सवाल–जवाब

मुम्बई

एक प्रेमी: *मेरा सवाल बीमारी को लेकर है। मैं जब किसी तरह की शारीरिक या मानसिक बीमारी से ग्रस्त लोगों के संपर्क में आता हूँ तब मुझे कुछ दिन उनके संपर्क में रहना पड़ता है। उस समय वे मुझसे मदद चाहते हैं तो मुझे महसूस होता है कि मैं उनकी समस्या अपने ऊपर ले रहा हूँ लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मैं नहीं जानता कि बीमारी संपर्क में आने के कारण होती है या कर्मों के कारण होती है?*

बाबा जी: हम जिस संगत में जाते हैं उसके रंग में रंग जाते हैं। यह सन्तों की संगत पर भी लागू होता है अगर आपको नामदान नहीं मिला और आप सन्तों की संगत में जाते हैं, बाद में जब आपको नामदान मिलता है तो आप नाम का सिमरन करने लग जाते हैं। रूहानियत एक छूत की बीमारी की तरह है। आप जिस भी माहौल में अपना समय बिताते हैं उसका कुछ असर आपके शरीर पर जरूर पड़ता है, यह स्वाभाविक है।

हुजूर महाराज कहा करते थे, ''अगर किसी आदमी को खुजली की बीमारी है, वह दस–पन्द्रह लोगों के बीच में जाकर बैठता है आखिर वह सबमें उस बीमारी को फैला देगा।''

आप लोग किल्लेयाँवाली गाँव गए हैं, वहाँ हम लोग दिल्ली से लौटते समय सतसंग के लिए रूके थे। किल्लेयाँवाली वह जगह है जहाँ मैं महाराज कृपाल के चोला छोड़ने के बाद गया था। जब मैं वहाँ गया तब मेरे पाँव में जूते नहीं थे, सिर पर पगड़ी नहीं थी और मेरे पास सिर्फ एक तौलिया ही था। तब मेरा सारा समय रोने में ही बीतता था। उस गाँव में रहने वाले करीब–करीब सारे लोग किसी न किसी नशे के शिकार थे। एक के बाद एक जो लोग मेरी संगत में आए उन्होंने नशा करना छोड़ दिया।

जो बीमारी मुझे थी वह सारे इलाके में फैल गई। आपने देख ही लिया है कि अब उनमें कितनी श्रद्धा है, ऐसा मेरी संगत में आने के कारण ही हुआ।

जहाँ तक बीमारी और कर्मों के भुगतान का सवाल है, बीमार होने के बाद ही पता लगता है कि आपको कितने कर्मों का भुगतान करना है। यह आपको तभी पता लग सकता है जब आप वह दर्द या रोग सहते हैं।

एक प्रेमी: *मेरी माता और परिवार के अन्य सदस्य मुझे हमेशा उस शहर में लौटने के लिए कहते हैं जहाँ वे रहते हैं। मैं अपनी माता से बहुत प्यार करता हूँ, उसका अहसान महसूस करता हूँ लेकिन वहाँ पर सतसंग नहीं है और मैं उनके रंग में रंगना नहीं चाहता। मैं आपके प्यार में रंगना चाहता हूँ। मेरा अपने परिवार के प्रति क्या फर्ज है?*

बाबा जी: भारत में माता–पिता अपने बच्चों से बहुत आशाएं रखते हैं। माता–पिता ने आपकी सारी इच्छाएं पूरी की हैं तो बच्चों का भी फर्ज बनता है कि वे माता–पिता की इच्छाएं पूरी करें। जहाँ तक रूहानियत का सवाल है अगर हमें अपने माता–पिता के पास रहना पड़े फिर भी हमें गुरु के साथ रिश्ता बनाए रखना चाहिए। हम ऐसा कर सकते हैं अगर परिवार में मेलजोल हो। आपको अपनी माता और परिवार के अन्य सदस्यों को प्यार से इस पंथ के बारे में बताना चाहिए ताकि वे भी इससे फायदा उठा सकें।

सन्तमत हमें दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाना सिखाता है। सन्तमत हमें बुजदिल बनना या दुनिया से दूर भागना नहीं सिखाता। परमात्मा की भक्ति करना भी हमारी जिम्मेवारी है, जो हमने निभानी है।

मैं जब तक अपने माता–पिता के पास रहा मैंने वह सब किया जो एक बेटे को अपने माता–पिता के लिए करना चाहिए था। मेरा अपने माता–पिता के प्रति जो भी फर्ज था वह मैंने पूरा किया, हाँलाकि जिन माता–पिता ने मुझे पाला–पोसा उन्होंने मुझे जन्म नहीं दिया था लेकिन जब वे मुझे भक्ति करने से रोकते तो मैं उनकी बात नहीं मानता था।

एक प्रेमी: *क्या यह ठीक है कि हम अपने कष्ट को सहने के लिए गुरु से मदद के लिए कह सकते हैं, क्या यह आप पर बोझ होगा?*

बाबा जी: मैं आपको ऐसा करने से नहीं रोकूंगा। सन्त, संगत में अपने गुरु के सच्चे सेवादार के रूप में आते हैं इसलिए वह कभी मना नहीं कर सकते।

एक प्रेमी: *सन्त जी! मैं जब कभी बहुत दर्द में होता हूँ उस समय सिमरन करता हूँ तो दर्द मिट जाता है इसका मतलब यह है कि गुरु शिष्य के कहे बिना ही कष्टो का निवारण करता है?*

बाबा जी: ऐसा एक भी सैकिंड नहीं जब गुरु शिष्य की मदद नहीं कर रहा। गुरु शिष्य को जितनी ज्यादा हो सके मदद भेजता है क्योंकि गुरु की मदद के बिना शिष्य कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''सतगुरु अपनी हर साँस के साथ शिष्यों की रक्षा कर रहा है। जब आप साँस लेते हैं तो गुरु आपकी रक्षा करता है, जब आप साँस निकालते हैं तब भी आप गुरु की सुरक्षा में रहते हैं।''

एक प्रेमी: *राजस्थान के पिछले सतसंग में आपने एक सतसंग में बताया था कि जो कुछ होता है वह परमात्मा की मर्जी से होता है। क्या हम सिमरन से परमात्मा की मर्जी को बदल सकते है?*

बाबा जी: शुरु में हर इंसान परमात्मा की मर्जी को बदलना चाहता है लेकिन जब आप सिमरन करके अपनी आत्मा को परमात्मा में मिला देते हैं और परमात्मा का स्वरूप बन जाते हैं तब आप सीख जाते हैं कि परमात्मा की मर्जी में कैसे खुश रहना है। इसके बाद आप कभी भी परमात्मा की मर्जी नहीं बदलना चाहेंगे। ***

धन्य अजायब

कुदरत करके वसया सोये
वक्त विचारे सो बन्दा होये

समय के अनुसार कुछ चीजें बदलनी पड़ती है इसी तरह अजायब बानी मासिक पत्रिका दिसम्बर 2020 के बाद प्रेस प्रिंटिंग नहीं हो पाएगी अत: अब आपको यह पत्रिका अपने फोन के whatsapp पर प्राप्त करनी होगी। आप कृपया हमें अपने whatsapp no. की जानकारी 99 50 55 66 71 पर दें ताकि आपको Ajaibbani Hindi Magazine के ग्रुप में शामिल कर लिया जाए।

यह मासिक पत्रिका अजायब बानी व सन्त बानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर– 335039 जिला – श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी आप www.ajaibbani.org पर प्राप्त कर सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए कृपया 80 79 08 46 01 व 96 67 23 33 04 पर संपर्क करें।